मुकंद और रियाज़

मुकंद के पास एक क्रिकेट की टोपी थी। उसके सबसे अच्छे दोस्त रियाज़ को वह टोपी बहुत पसन्द थी। वह उसे पहनना चाहता था लेकिन मुकंद उसे अपनी टोपी कभी नहीं देता था। जब भी मुकंद अपनी टोपी पहनता तो उसे लगता था कि वह कुछ भी कर सकता है।

एक दिन मुकंद अपनी साइकिल चला रहा था। रियाज़ उसे पकड़ने के लिए पीछे दौड़ रहा था। हड़बड़ी में मुकंद साइकिल से गिर गया और उसकी बाँह टूट गई।

रियाज़ मुकंद को एक हड्डी बैठाने वाले के पास ले गया। वह कराची बन्दरगाह के पास कीमारी में रहता था। हड्डी बैठाने वाले को सब कीमारी का भैया कहते थे और वह सबका दोस्त था। उसने लड़कों से कोई फीस नहीं ली लेकिन उन्होंने कुछ पैसे दानपात्र में डाल दिए।

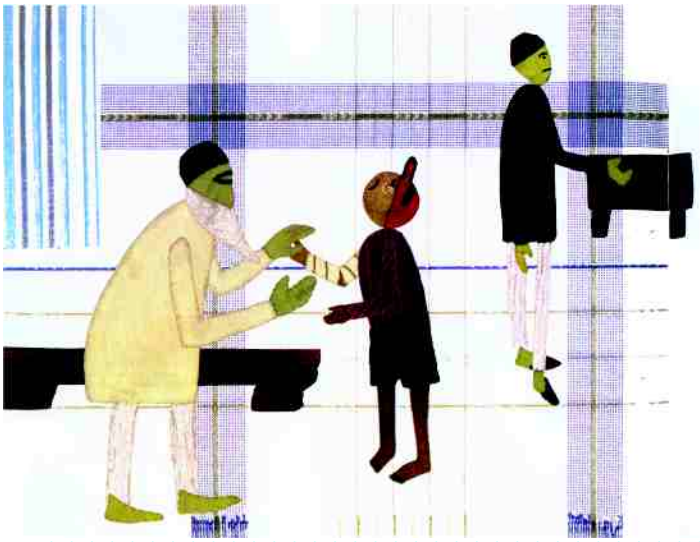

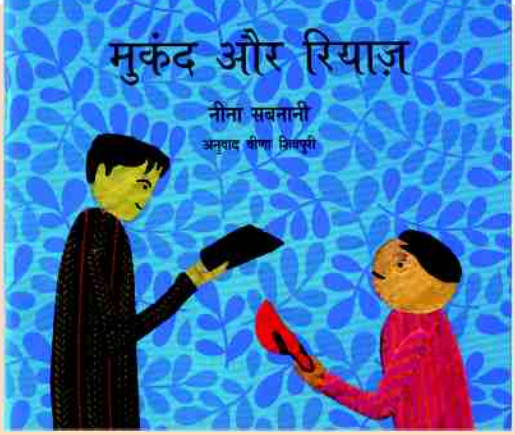

यह कहानी भारत-पाकिस्तान के बँटवारे की पृष्ठभूमि पर रची गई है। दोस्ती, प्रेम, आनन्द, रंग और सुख-दुख की दिलकश कहानी।

नीना सबनानी की इस खूबसूरत कहानी को किताब के रूप में उतने ही खूबसूरत ढंग से पेश करने का कमाल किया है तूलिका प्रकाशन ने। अगर तुम्हें मौका मिले तो इस किताब को ज़रूर पढ़ना-देखना।

किताबः मुकंद और रियाज़

लेखकः नीना सबनानी

अनुवादः वीणा शिवपुरी

प्रकाशकः तूलिका पब्लिशर्स, 13 पृथ्वी एवेन्यू अभिरामपुरम, चैन्नै - 600018

कीमतः सौ रुपए

जब मुकंद ठीक हो गया तो वह केम्बेल स्ट्रीट पर अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने गया। उसने रियाज़ को अपने साथ खेलने के लिए बुलाया लेकिन रियाज़ ने कहा कि वह पढ़ना चाहता है। अचानक...

....एक फौजी गाड़ी आई और सड़क पर रुक गई। उसमें से एक अँग्रेज़ सिपाही नीचे कूदा। उसने सब लड़कों से अपने-अपने घर चले जाने को कहा।

मुकंद और रियाज़ घर जाने की बजाय बाज़ार चले गए, अपने पसन्दीदा नानबाई की दुकान पर। वहाँ उन्हें बिस्कुट से भरे मीठे बन खाना बहुत अच्छा लगता था। उस रोज़ भी उन्होंने दुकान से कुछ बन खरीदे और पुस्तकालय चले गए।

रविवार को मुकंद गुरुद्वारे के बाहर लोगों के जूतों की देखभाल करता था। वह आने वाले भक्तों को बर्फ का ठण्डा पानी भी पिलाता था। यह पानी वह अपने प्यारे दोस्त लाडाराम फालूदावाले के यहाँ से लाता था।

लाडाराम उससे खुश था क्योंकि मुकंद उसकी मदद करता था। वह मुकंद को खाने के लिए कुल्फी और घर ले जाने के लिए एक बालटी पानी भी देता था।

घर पर मुकंद अक्सर टोपी पहनकर आइने के सामने खड़ा हो जाता और भविष्य के रंग-बिरंगे सपनों में खो जाता था।

एक दिन मास्टरजी स्कूल नहीं आए। उस रोज़ मुकंद और उसके दोस्तों ने खूब मस्ती की।

थोड़ी देर बाद रियाज़ वहाँ आया। उसने मुकंद से जल्दी घर चलने को कहा। उसने बताया कि उनके मुल्क के दो टुकड़े कर दिए गए हैं – भारत और पाकिस्तान। अब मुकंद के परिवार को यहाँ से जाना होगा। इसलिए मुकंद को जल्दी घर जाकर सामान बाँधना चाहिए।

मुकंद को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। रास्ते में भी अजीब चीज़ें नज़र आईं। लोग चीखते-चिल्लाते भाग रहे थे। हर तरफ अफरा-तफरी का माहौल था। उसे सड़क पर खून भी दिखाई दिया।

रियाज़ कुछ कुर्ते और जिन्ना टोपियाँ लेकर उनके घर आया। उसने मुकंद से कहा कि वह अपने कपड़े और टोपी बदल ले। मुकंद ने साफ इनकार कर दिया। इस पर मुकंद के पिता ने उसे समझाया कि उनकी जान खतरे में है। अगर वे कुर्ते और जिन्ना टोपी पहन लेंगे तो बाकी लोगों के जैसे ही दिखाई देंगे। इस तरह से वे बगैर किसी का ध्यान अपनी ओर खींचे चुपचाप कराची से बाहर निकल सकेंगे।

रियाज़ ने उनकी बहुत मदद की। वह गाड़ी चलाना जानता था। हालाँकि उस समय उसकी उम्र गाड़ी चलाने के लायक नहीं थी लेकिन यह मुश्किल की घड़ी थी। रियाज़ मुकंद और उसके परिवार को बन्दरगाह पर ले गया जहाँ एस.एस. शिराला नामक जहाज़ उन्हें भारत में बम्बई ले जाने के लिए खड़ा था। बन्दरगाह पर भी लोगों की भागमभाग थी, इसलिए उन्हें झटपट जहाज़ पर सवार होना पड़ा।

मुकंद के परिवार ने रियाज़ को बहुत धन्यवाद दिया। मुकंद रियाज़ को छोड़कर जाना नहीं चाहता था। अब वह किसके साथ खेलेगा?

मुकंद जहाज़ की रेलिंग पकड़ कर खड़ा था और रियाज़ को देख रहा था। रियाज़ ने उसकी ओर देख कर हाथ हिलाया। एकाएक मुकंद ने अपनी पसन्दीदा टोपी उतारी और रियाज़ की तरफ उछाल दी।

जहाज़ रवाना हो गया। दोनों दोस्त एक-दूसरे की ओर देखते हुए हाथ हिलाने लगे। वे हाथ हिलाते रहे, हिलाते रहे जब तक कि एक-दूसरे की नज़रों से ओझल नहीं हो गए।

मुकंद और रियाज़ फिर कभी एक-दूसरे से नहीं मिले लेकिन जब भी मुकंद जिन्ना टोपी को देखता तो उसे अपने सबसे अच्छे दोस्त की याद आ जाती थी।

यह सब मुझे मुकंद ने बताया। मुकंद मेरे पिता थे। चकमक